>

Title: Resolution regarding special status to the State of Bihar.

MR. CHAIRMAN: Item No. 13 Dr. Bhola Singh.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PLANNING AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Chairman Sir, he can speak now; it may be continued in the next Session.

सभापति महोदय : चार-पांच मिनट बाकी हैं।

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:-

> "कि यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि वह बिहार राज्य में विकास की गति में तेजी लाने तथा इसे पिछड़ेपन से निपटने में सबल बनाने के उद्देश्य से इसे विशेष राज्य का दर्जा प्रदान करे। "

कहां तो यह तय था कि चिरागां हर एक घर के लिये हो, कहां चिरागा मयस्सर नहीं शहर के लिये। यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है ,चलो कहीं और चलें उम्र भर के लिए।

सभापति महोदय, मैं अपना संकल्प इस सार्वभौम सदन में बिहार के लिए लेकर आया हूं, याचना के लिये नहीं, दया के लिए नहीं लाया हूं। मैं इतिहास में किस तरह से दधीचि की हड्डी बना है, किस तरह हमने इस देश के विकास के लिए रक्तदान किया है, किस तरह से हमने दुनिया में मानवता की सेवा की है, किस तरह से हमने संविधान को आधार प्रदान किया है और आज उसकी गति केन्द्र सरकार की नीति के कारण है। उसकी नीयत, उसके दृष्टिकोण के कारण आज हमारी यह स्थिति हुई है।

सभापति महोदय, मैं आपको इतिहास की ओर ले जाना चाहता हूं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व एक राजकुमार था। उसकी शादी हुई और उसका एक लड़का हुआ लेकिन गरीबी को देखकर, मृत्यु को देखकर वह चिन्तन में रहा। उसने खोज की कि गरीबी क्यों है? दुख क्यों है? पीड़ा क्यों है? इसका निवारण कैसे हो सकता है? उस युवक का नाम सिद्दार्थ था जिसने 6 वर्ष तक कठिन तपस्या की। उसके शरीर पर घास-फूस उग आयी लेकिन तब एक दलित की बेटी सुजाता ने उस महामानव के सामने खीर परोसी तो सिद्धार्थ बुद्ध हुये। उसने बौद्ध धर्म की स्थापना की जो आज दुनिया का सब से बड़ा धर्म है। उसकी जननी बिहार है।

सभापति महोदय, मैं अब इतिहास के एक और प्रकरण की ओर आपको ले जाना चाहता हूं। सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिह जिनका इतिहास त्याग और कुर्बानी का है जिन्होंने इस वतन के लिये बड़ी बड़ी कुर्बानियां दीं। उनके धर्म ने, उनके सिख समुदाय ने अपने बेटों को बलिदान कर दिया। उसकी जननी बिहार पटना सिटी है। गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म यहीं हुआ था। बिहार भारत की आकृति है। यह न केवल भारत की भौगोलिक आकृति बल्कि ऐतिहासिक आकृति है। मैं ऐसा इसलिये कहना चाहता हूं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के जमाने में मगध साम्राज्य के सम्राट हुए तो उन्होंने अपने साम्राज्य की सीमा हिन्दुकुश पर्वत तक की थी। उस समय सिकन्दर का सेनापति सैल्युकस आया जिसके साथ संघर्ष किया। लड़ाई में सैल्युकस को हराया था और बाद में उसकी बेटी से शादी भी की। चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन में चाणक्य, जिसे कौटिल्य कहते हैं,उसका प्रधान सचिव था। मौर्य के शासनकाल में यूनान का विदेशी राजदूत मैगस्थनीत आया हुआ था। उसने चन्द्रगुप्त मौर्य से पूछा कि आपके साम्राज्य में इस समृद्धि का क्या कारण है? तब चन्द्रगुप्त मौर्य ने कहा कि अगर आपको जानना है तो हमारे मंत्री कौटिल्य हैं, उन से जाकर यह जानकारी प्राप्त कर लीजिये।

18.00 hrs.

मेगास्थनीज ने कौटिल्य से समय मांगा, कौटिल्य ने समय दिया। जब मेगास्थनीज कौटिल्य के नजदीक पहुंचा तो उसने देखा।

MR. CHAIRMAN: You may continue your speech next time. Now, time of Private Members' Business is over. Please sit down.

MR. CHAIRMAN: Now, we will start 'Zero Hour'.

But before I call the name of the hon. Members, I say that there are many hon. Members who have submitted their notice for making special mention. I would request all of you to please confine your speeches within 2-3 minutes. Please cooperate with the Chair.

Shri Rajen Gohain.